रिकॉर्ड :– हमें उन राहों पर चलना है..... ॐ पिताश्री 17/8/63

ओम् शांति। बच्चों को जो श्रीमत देते हैं, उस मत प्रमाण चलना है। हाँ, उस मत पर चलते हैं; परन्तु फिर घड़ी–2 गिर जाते हैं। कौन–सी मु(ख्य) मत देते हैं? पहले–2 बाप फरमाते हैं कि अपने परमधाम, शांतिधाम को याद करो। यह बाप मत दे रहे हैं सभी ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण और ब्राह्मणियों को। ब्रह्मा–सरस्वती और जो भी बच्चे हैं, सभी को मत मिलती है। ऊँच ते ऊँच भगवन की है श्रेष्ठ मत। भगवान परमधाम में रहने वाला है। हम बच्चे भी परमधाम से आए है ना। बाप के लिए भी कहा जाता है दूर देश से आया देश पराए। अब यह देश पराया किसका है? क्यों ऐसा गाया जाता है? परमधाम में कौन रहते हैं? परमपिता प०। हम आत्माएँ, जो अब पार्ट बजाए रही हैं, हम भी परमधाम में रहने वाले हैं। आते सभी कहाँ से हैं? इनकारपोरियल वर्ल्ड में है हम आत्माओं का स्टॉक। यह तो हर एक जान सकते हैं कि आत्मा यहाँ के रहने वाली नहीं है। आत्मा आती है परलोक से। कोई मरते हैं तो भी कहते हैं, फलाणा परलोक पधारा। कौन? आत्मा। शरीर तो नहीं पधारा। आत्मा पधारी। स्मृति आती है तब कहते, परलोक (प)धारा। कोई फिर कहते हैं, प० अथवा ब्रह्म से जाकर मिला। लीन होने की तो बात नहीं। बाकी गया तो सही ना। ज़रूर परमधाम ही जावेगी। हम आत्माएँ परमधाम में रहती है, वहाँ

से आती है इस लोक में। उनको शांतिधाम, निर्वाणधाम अथवा परलोक कहा जाता है। परलोक स्वर्ग को नहीं कहेंगे। जहाँ नर्क है, वहाँ ही फिर बदल कर स्वर्ग होना है। जब स्वर्ग है तो नर्क रहता नहीं। ..... इस ही भारत खण्ड में है। खास भारत का ही नाम लेना है। भारत ही स्वर्ग था। उसी समय मनुष्य बहुत कम थे, तब इतनी सभी आत्माएँ कहाँ थीं? वो स्टॉक शांतिधाम में थीं। यह भी समझाना है कि 3 धाम हैं। शांतिधाम, सुखधाम और दुखधाम। दुखधाम कहना न चाहिए; परन्तु अक्षर मिलाने लिए कहते हैं। कोई कहे, हमको शांति चाहिए। अरे, कर्म तो ज़रूर करना पड़े ना। यह है ही टॉकी दुनिया। तो टॉक ज़रूर करना पड़े। कर्मयोग है। तो बाप समझाते हैं, हम भी परमधाम से आए हैं। कहते हैं ना, शरीर छोड़ निर्वाण गया। तो ज़रूर वहाँ से आया होगा तब तो गया। आत्माएँ वहाँ से आई हैं पार्ट बजाने। फिर से रिपीट करना है ज़रूर। फिर इतनी सभी आत्माएँ वापिस जावेंगी। अभी तो कोई वापिस नहीं जा सकतीं; क्योंकि तमोप्रधान हैं। पंख टूटे हुए हैं। जटाऊ होता है ना। कहते हैं, रावण ने जटाऊ का रूप धर सीता को ले गए। अब जटाऊ आदि तो कोई होता नहीं। मनुष्य को कोई जानवर वा पखी आदि ले जा सकता है क्या? हाँ, सिर्फ एरौप्लेन मनुष्य को ले जाते हैं। बाकी यह तो सभी दंत–कथाएँ हैं। अब बाप समझाते हैं मूल बात– मीठे बच्चे, अब तुमको जाना है ज़रूर। इसलिए बुद्धि में वो याद रखो। एक/दो को सावधान कर बुद्धियोग लगाते रहो। तुम जानते हो, नाटक पूरा होता है। अब यह शरीर छोड़ हमको वहाँ जाना है। फिर आवेंगे अपना पार्ट फिर से रिपीट करने। हम 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्म कोई एक ही सतयुग में तो नहीं लेंगे। आदि से लेकर अंत तक मनुष्य के 84 जन्म हैं। आदि सनातन देवता धर्म के ही 84 जन्म होते हैं और वो हो न सकते। सिर्फ सतयुग में 84 जन्म तो ले न सके। 1250 बरस में 84 जन्म कैसे लेंगे? वहाँ तो आयु बड़ी होती है। हरेक को सतो,रजो,तमो में ज़रूर आना ही है। ऐसे हो नहीं सकता, सतयुग में ही 84 जन्म ले और वापिस चले जाए। तमो, पतित जब बने, तब फिर पतित–पावन आकर सभी को ले जाते हैं। तुम जानते हो, यह चोला छोड़ फिर हम सतोप्रधान चोला लेंगे। यह ड्रामा बना हुआ है। पाँच–2 हज़ार बाद बाप आते हैं पार्ट बजाने, तुमको राजभाग देने। तुम कहेंगे, अनगिनत समय हम आए हैं, आपसे मिले हैं, फिर कल्प–2 मिलते रहेंगे। यह स्मृति रहे, अब हम बाबा से मिले हैं। फिर से 84 जन्मों का पार्ट रिपीट करेंगे। इतना याद रहे तो भी अहो भाग्य। यह प्वाइंट्स हैं किसको गिरने से बचाने की। पुस्ती आती है। बाबा यह तो बरोबर 84 जन्म पूरे हुए, फिर रिपीट करना है। वापिस मुक्तिधाम तो आपके सिवाय कोई ले नहीं जा सकेंगे। आप पण्डा हो। हम आपसे राजभाग लेने पुरुषार्थ कर रहे हैं। है बहुत सहज। बीज याद आने से सारा झाड़ याद आ जाता है। जैसे बाप को कहा जाता है– सत् है, चेतन है, ज्ञान का सागर, आनंद का सागर है..... तो तुम बच्चे भी ठहरे। तुम्हारी इस समय कृष्ण जैसी महिमा सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, यह तो हो न सके। अभी कोई भी सम्पूर्ण निर्विकारी बना नहीं है, जब तक अंत हो। ब्रह्मा की आयु पूरी हो फिर रिज़ल्ट निकलेगी। अभी तो पुरु(षार्थ) है। अंत मते सो गते होगी। तो जैसे बाबा निराकार है, तुम भी कहेंगे– हम निराकार आत्मा है, सत्–चित है। तुम बाप के बच्चे मास्टर हो गए। जो बाबा की महिमा सो तुम्हारी महिमा गाई जावेगी। तुम हरेक .... निराकार सत्–चेतन हो। बाबा ज्ञान का सागर, तुम भी मास्टर ज्ञान का सागर हो। सतयुग में हम अपनी यह महिमा नहीं करेंगे। इस समय तुम हो ईश्वर के बच्चे, फिर बनेंगे दैवी बच्चे। यह बहुत मीठी–2 प्वाइंट्स हैं, जिसको धारण करने से खुशी का पारा चढ़ता है। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं उन्हों की अंत में यह अवस्था रहनी है। तुम ईश्वरी(य) सं(तान) हो तो वो गुण होने चाहिए। महिमा भी गाई जाती है– सत् है, चेतन है। ऐसे थोड़े ही, यह महिमा सभी की हो सकती। हमारी भी महिमा पुरुषार्थ पर है। हम बाप जैसे बन रहे हैं। बनने बाद फिर हम देवताओं के संगठन में आवेंगे। फिर दैवी गुणों की रसम–रिवाज़ होगी। यह इस समय का रिवाज़ है,

जो बाप जैसे बनते हैं सो तो ज़रूर ब्राह्मण ही बनेंगे। कोटों में कोऊ बनेंगे। तकदीर में जब हो तब समझे। अब तुम बच्चों को फॉलो करना है बाप को। फिर देवताओं को फॉलो करेंगे। अभी हम ईश्वर को फॉलो करते हैं, तो वो गुण हमारे में आते हैं। बाबा सत है, चेतन है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है; इसलिए उनमें ही सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का ज्ञान है। हम उस बीज के बच्चे बने हैं तो हमको भी आदि–मध्य–अंत का ज्ञान हैं। ऐसे ही अपन को समझना चाहिए। तुम बन रहे हो उन द्वारा। नम्बरवार तो हैं ना। कोई में थोड़ा ज्ञान है। पवित्रता भी थोड़ी है। कोई 95% पवित्र रहेंगे, कोई 5% पवित्र रहेंगे। पिछाड़ी तक कोई गिरते रहेंगे। फिर आते रहेंगे। तुम्हारा काम है शिवबाबा से। ऐसे न समझो, संस्था से काम है। शिवबाबा कहते हैं, (संस्था) में तो रहो न रहो, विलायत में बच्चियाँ हैं। फिर वो किस संस्था में है। उन्हों का भी योग तो एक से है ना। वर्सा बाबा से लेना है। उनसे योग लगाना है। यह संस्था अथवा ब्राह्मण जो सिखलाते हैं, वो अगर सीखेगा तो अच्छा है, नहीं तो बाप से योग लगाओ और मुरली सुनते रहो। अगर मुरली न पढ़ी अथवा न सुने तो समझो, मुर्दा होने की तैयारी करता है। ज्ञान तो अंत तक सुनना है। ज्ञान की धारणा न होगी तो योग भी नहीं लगेगा। अगर टेप सुनना अथवा मुरली पढ़ना छोड़ दिया तो बस समझो, मौत सामने हैं। फिर ईश्वरी(य) औलाद से बदल आसुरी औलाद हो पड़ेगा। फिर वो आसुरी संग खराब कर देगा। इसलिए मुरली तो कहाँ भी सुननी है ज़रूर, अगर ऊँच पद पाना है तो। विलायत में भी मुरली ज़रूर पढ़ते हैं। कहते, मुरली तो हमारा जीयदान है। मुरली न पढ़े तो खतम हो जावेगा। फिर समझा जावेगा, ईश्वरी(य) संतान था, फारकती दे दी। ऐसे मूर्ख बहुत हुए हैं और बहुत होने वाले हैं, जो बाप का हाथ छोड़ देंगे। यह पिछाड़ी तक चलता रहेगा। बरस दो बाबा–मम्मा कहते, फिर फारकती दे देते। फिर खलास हो जाते। इसलिए मुरली तो ज़रूर सुननी चाहिए। शिवबाबा और वर्से को याद करना है। तो भी संगठन ज़रूर चाहिए। हमजिंस चाहिए। हंस–बगुले के बीच रह अवस्था जमा न सके, जब तक कोई सावधान करने वाला न हो। बाकी सर्विस करेंगे तब बाबा मदद देंगे। हिम्मदे मर्दा मददे खुदा। सर्विस बिगर पद क्या पावेंगे! भल वैकुण्ठ में जाएँगे; परन्तु कौन–सा पद? ब्राह्मण बन और फिर ब्राह्मणों का साथ लेना पड़े। वो ब्राह्मण तो हैं झूठे। वो कोई ब्रह्मा की मुखवंशावली नहीं हैं। तो बाप मु(ख्य) बात समझाते हैं– लाडले बच्चे, अपन को परमधाम में रहने वाले समझो। यह पुराना चोला छोड़ देना है। फिर हम नई दुनिया में आकर राज्य करेंगे। राजभाग करने लायक ज़रूर बनना पड़े। बंदर तो नहीं, ल०ना० बनेंगे। यह है भी सत्य ना० की कथा। सत्य राम–सीता की कथा नहीं होती। तो पुरुषार्थ कर ऐसा बनना चाहिए। बहुत मार्जिन है। हम पुरुषार्थ करने से ना० (बनेंगे) ज़रूर वा माँ को फॉलो करो। ऐसे नहीं, बा(प)–माँ को फॉलो करो। ऐसे नहीं, बा(प)–माँ की संभाल बच्चों को करनी है। नहीं। बच्चों को धारण कर और फिर कराना है। सिर्फ स्थूल सेवा करने से ऊँच पद न मिलेगा। हरेक समझ सकते हैं, अगर हमारा अब शरीर छूट पड़े तो हम क्या बनेंगे। काल तो अचानक आता है ना। पता नहीं पड़ता है। समाचार आते हैं ना। आज धरती हिली, (2) हज़ार मर गए। अर्थक्वेक तो बहुत आने वाली है। अचानक मौत हो जाता है। बाबा आकर बुद्धि का ताला खोलते हैं। अगर वो न खुलता है तो अज्ञानी से भी चट खाते हो जाते। अब तुम पत्थर नाथ से पारस नाथ बनने वाले हो। दुनिया तो पत्थरबुद्धि है। अभी देखो, मकान भी पत्थरों के बनाते हैं। हम जानते हैं, इसके बाद फिर हम वहाँ हीरे–जवाहरों के महल बनावेंगे। अभी हम ब्राह्मण पत्थरों के मकान बना रहे हैं। तो बुद्धियोग को इस पत्थर की दुनिया से निकाल पारस दुनिया में लगाना पड़े। यह पत्थर के मकान पुरानी दुनिया में बनते हैं। नई दुनिया में सोने के महल बनेंगे। तो पुरानी से दिल न लगानी है। पुरानी दुनिया में करके नया घर बनाते हैं। जैसे नई देहली बनी है; परन्तु वो भी तो टूट जावेगी। दुनिया पुरानी है ना। नई माना हीरे–जवाहरों के महल। वो होंगे सतयुग में। तो इस दुनिया के मकान आदि

में ममत्व नहीं है। यह तो टेम्पररी बना रहे हैं। पुरानी दुनिया में भल मकान आदि बनाओ; परन्तु आसक्ति रहता। बुद्धियोग मुक्ति–जीवनमुक्ति धाम से लगाना है। समझाते तो बहुत हैं; परन्तु फिर (भूल जा)ते हैं। कोई को ..... रहती है, नोट करते हैं समझाने लिए। नोट कर धारण करना चाहिए। इस पुरानी दुनिया में तो भल मारबल का अथवा सोने का भी करके बनावे, सोने का बनाए तो न सकेंगे। अगर बनावे, तो भी काम का न है। यह तो खतम हो जावेगा ना। तुम जानते हो, पुरानी दुनिया में अभी जो जावेंगे, उनमें ममत्व न रखना है। ममत्व लगाने से नई दुनिया में जाना मुश्किल हो जाता है। बहुत बच्चे लिखते हैं, हम नेष्टा में बैठते हैं; परन्तु बुद्धियोग लगता नहीं है। बाबा कहते, ऐसे तो तुम बच्चों को कहा नहीं जाता कि एक जगह बैठ याद करो। .....जली बैठेंगे तो माया और ही माथा खराब कर देगी। यह तो चलते–फिरते, खाते–पीते याद करना है। फिर तुम खास क्यों बैठते हो? करके संगठन होता है। बाबा कहते हैं, चलते–फिरते उस याद में रहो। ऐसे नहीं, सिर्फ जब कथा सुनने बैठो तब नेष्टा में रहो। चलते–फिरते याद में रहना सहज होगा। खास बैठने से योग मुश्किल लगेगा। वो टेव रखनी है। खास बैठते हैं गोया बाबा के डायरैशन न मानने वाले हैं। चलते–फिरते, उठते–बैठते योग में रहना है; क्योंकि मनुष्य का मौत तो अचानक हो जाता है। अचानक कोई दर्द हुआ, यह मरा। तो हेर होगी तो झट याद में रहेंगे। उसी समय थोड़े ही हाल में बैठे नेष्टा करने का समय मिलेगा। मनुष्य तो स्नान करते, भोजन खाते, लेक्चर करते भी मर जाते हैं। प्रैक्टिस होगी तो झट उस समय याद में रहेंगे, नहीं तो नेष्टा स्थान याद पड़ेगा। बाबा तो ऐसे कहते नहीं ..... हाल में बैठो। बाबा तो कहते, ऐसे बैठेंगे तो और ही तकलीफ होगी। समझो, पेट में दर्द पड़ता है, तो भी बाबा को याद करेंगे तो अंत (मते) सो गते हो जावेगी। रात को भी जाग बाबा को याद करो। ऐसे भी नहीं, उठकर बैठना है। नहीं। भल सोए पड़े हो, याद करो। कहते हैं– बाबा, ऐसे नींद आ जाती है। इसके लिए तो अभ्यास करो। उठते–बैठते, खाते–पीते याद करने का अ(भ्यास) करो तो वो टेव पड़ जावेगी। अच्छा। अब उ(त्सव) मनाना पूरा हुआ। अब फिर तैयारी करेंगे ..... की। यह ..... बड़ा खराब है। कृष्ण का फिर भी ठीक है। इसमें तो शैतानी है। तो इसके लिए फिर और ही अच्छी तैयारी करनी चाहिए। मनुष्यों को बेवकूफ, नॉनसेंस बुद्धि .....कर बतावें कि यह कैसी बेइज़्ज़ती करते हैं। एक रावण का चित्र निकाले, फिर नीचे स्त्री–पुरुष का चित्र हो और लिखत हो, 5 विकार स्त्री के, 5 विकार पुरुष के, इनका यह रावण रूप होता है। अब हरेक युगल, जो विकारी हैं, वो गोया (रावण) का (रूप) हैं। सारी दुनिया रावण का रूप है। इसलिए भगवानुवाच्य है कि तुम हो आसुरी सम्प्रदाय; क्योंकि तुम सभी में 5 विकार हैं। इसलिए हरेक रावण रूप है। काम चिक्षा से उतर ज्ञान चिक्षा पर बैठो तो रावण जल जावेंगे। ऐसे–2 विचार–सागर–मंथर कर चित्र बनाना चाहिए। कार्टून भी कम खर्चा में बन सकते हैं। एक तरफ ल०ना० का चित्र, दूसरे तरफ यहाँ के मनुष्यों का चित्र हो। वो दैवी सम्प्रदाय, यह आसुरी सम्प्रदाय। रावण की दुनिया है। कार्टून बनने में देरी (नहीं) लगती। ल०ना० के ऊपर राम–.....(शिव) का चित्र और इस समय के मनुष्यों ... ऊपर रावण का चित्र। (फिर) लिखना चाहिए। हरेक युगल रावण है। जैसे अपना ही बुत बनाए बरस–2 जलाते हैं; परन्तु रावण जलता नहीं। जब तक स्त्री–पुरुष ज्ञान चिक्षा पर न बैठे तब तक (राम)वंशावली बन न सके। वो है रावण वंशावली। बाबा इशारा देते हैं। ऐसे चित्र बनाए बहुत पर्चे बाँट सकते हैं। दूसरे तरफ फिर 3 सेनाओं का कार्टून हो। यादवों का तो यह दो बिल्लों वाला बहुत अच्छा है। साथ में पाण्डवों और कौरवों का। तो मनुष्य (देख) वण्डर खावे। फिर इसमें भी है समझाणी। यह (पाण्डव) श्रीमत पर हैं, वो ..... मत पर। यह विजय माला में पिरोए जावेंगे। वो विनाश हो जावेंगे। अब कोई बच्चा निकले जो (हिम्मत) कर बाबा को दिखावे। कार्टून बनाना तो बहुत स.... है। सभी कहेंगे, इनका ज्ञान तो बड़ा वण्डरफुल है। अच्छा, मीठे–2 नम्बरवार सिकीलधे तो सभी हैं; परन्तु मीठे नम्बरवार हैं, तो मीठे (बच्चों को) गुडमॉर्निंग। ॐ